500 एमएसएमई इकाइयों को भी संजीवनी देगा ईवी प्लांट

अशोक लीलैंड के प्लांट से स्कूटर एंसलरीज एस्टेट से जुड़े उद्यमियों में भी जगी उम्मीद

रोली खन्ना

लखनऊ। अशोक लीलैंड राजधानी में ईवी प्लांट लगाएगा। कंपनी के प्रवेश से स्कूटर इंडिया के आसपास रौनक लौट आई है। इसने स्कूटर एंसलरीज एस्टेट से जुड़े उद्यमियों में भी उम्मीद जगा दी है। इन्हें एमएसएमई के लिए चलाई जा रहीं सरकारी योजनाएं का भी लाभ मिलेगा।

सभी मान रहे हैं कि योजनाएं जिस रूप में सामने हैं, उसी तरह धरातल पर उतरीं तो स्कूटर इंडिया (अब अशोक लीलैंड) के आसपास 500 एमएसएमई इकाइयां विकसित होंगी। ये एक लाख लोगों का भरण पोषण करेंगी। एंसलरीज एस्टेट में ही करीब दो हजार परिवारों को प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार मिलेगा। इस क्षेत्र में मूल स्वरूप खो चुकीं 30 फैक्टरियों के दोबारा शुरू होने का रास्ता खुल गया है। इसके साथ ही बाहर के कामों से खुद को जिंदा रखे चार फैक्टरी संचालकों की उम्मीद बढ़ गई है कि उन्हें अब फिर से यहीं काम मिलने लगेगा।

30 फैक्टरियों के एस्टेट में दोबारा शुरू होने की बढ़ी आस

02 हजार के करीब लोगों को एस्टेट में ही मिलेगा रोजगार

01 लाख कुल लोगों को क्षेत्र में सीधे तौर पर होगा फायदा

खास खबर

स्कूटर एंसलरीज एस्टेट का अभी कुछ ऐसा है हाल। -संवाद

40 एकड़ तक में फैला है क्षेत्र

रजत मेहरा

अमौसी औद्योगिक क्षेत्र एसो. के महासचिव रजत मेहरा बताते हैं कि एंसलरीज एस्टेट 40 एकड़ तक में फैला है। इनमें महज चार कारखाने खुद को जिंदा रख पाए हैं, क्योंकि उन्होंने बाहर का काम करना शुरू कर दिया। 30 फैक्टरियां बंद हो गईं या बेच दी गईं। कुछ किराये पर हैं। कुल मिलाकार इस क्षेत्र का मूल स्वरूप खत्म हो गया।

स्कूटर एंसलरीज एस्टेट को जानें

जब स्कूटर इंडिया का प्लांट लगा था, तब सहयोगी उपकरण इकाइयों वाले क्षेत्र को स्कूटर एंसलरीज एस्टेट कहा जाने लगा। स्कूटर इंडिया की ओर से चयनित 30 हजार लोगों में से एक मैकेनिकल इंजीनियर सुधीर नंदा एंसलरीज एस्टेट को परिभाषित करते हुए बताते हैं कि मुख्य और सहायक उद्योग में माता-पिता और बच्चे जैसा संबंध होता है। ईवी प्लांट की जरूरत के हिसाब से यहां कई छोटी इकाइयां विकसित होंगी, जैसा स्कूटर इंडिया के समय हुई थी। जरूरत है कि सरकार इस क्षेत्र में आधारभूत संरचना, आर्थिक मदद की व्यवस्था पर फोकस करे।

सुधीर नंदा

संभावनाओं को लेकर उद्यमियों का नजरिया

सहयोग मिला तो तलाशेंगे निवेश के रास्ते

एंसलरीज एस्टेट के पूर्व अध्यक्ष बृजेन्द्र गुप्ता बताते हैं कि हमने स्कूटर इंडिया के समय यूनिएलास्ट प्रा. लिमिटेड के नाम से काम शुरू किया था। एक फैक्टरी आम तौर पर 50 परिवारों का भरण पोषण करती है। स्कूटर इंडिया के जाने के बाद स्थितियां बिगड़ीं। हमने बाहर से काम उठाया, इसलिए वजूद कायम है। इसी तरह प्रतीक इंडस्ट्रीज, शिवालिक और प्रीमियर आटे केबल्स ने खुद को बचाए रखा है। तय है कि अशोक लीलैंड के आने से एमएसएमई इकाइयों की स्थापना को बल मिलेगा। हमें भी काम मिलेगा, पर चुनौती है कि हमारी मशीनें पुरानी हो चुकी हैं। नई डिमांड के हिसाब से हमें खुद को अपडेट करना होगा। इसके लिए पैसे की जरूरत होगी। सरकार का सहयोग मिला तो हम निवेश के रास्ते तलाशेंगे।

बृजेन्द्र गुप्ता

250 उत्पाद बनाती थीं सहायक इकाइयां

प्रतीक इंडस्ट्रीज के हर्ष चावला बताते हैं कि हमारी फैक्टरी लोहे की कंपोनेंट शीट आदि तैयार करती है। स्कूटर इंडिया के दौर में 200-250 उत्पाद बनाते थे। हमारी फैक्टरी स्कूटर इंडिया से महज तीन किमी की दूरी पर थी। बड़े प्लांट के लिए जरूरी चीजें यदि बाहर से मंगवाई जाएं तो भाड़ा ज्यादा पड़ेगा। नए प्लांट के लिए कई चीजों की जरूरत पड़ेगी और नए उद्योग बढ़ेंगे। इससे हमारा भी दायरा बढ़ेगा।

हर्ष चावला

एस्टेट ही नहीं आसपास के क्षेत्र को भी लाभ

नेशनल इंजीनरिंग बक्सें के मो. सऊद बताते हैं कि हम रेलवे, टाटा आदि के साथ काम कर रहे हैं। नादरगंज स्थित फैक्टरी में ऑटो से जुड़े उत्पाद (कंपोनेंट) के अलावा कई चीजें बना रहे हैं। लीलैंड के आने से हमें भी काम मिलेगा और रोजगार का विस्तार होगा।

मो. सऊद